International Journal of Research in Social Sciences
Volume 8, Issue 8 (August 2018)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ऋषि परम्परा के कवि दिनकर

डॉ. मुकुल कुमार
हिंदी शिक्षक, पेंग्विन पब्लिक स्कूल,
झपहाँ, मुजफ्फरपुर

23 सितम्बर, 1908 का वह स्वर्णिम दिन। इस दिन बिहार के तत्कालीन मुंगेर जिले के समरिया की पावन भूमि ने एक ऐसे सपूत को जन्म देने का गौरव प्राप्त किया जो सन् 1920 से 1940 के मध्य ही अपनी साहित्यिक कृतियों से पूरे देश में राष्ट्रकवि 'दिनकर' के नाम से मशहूर हो गए। इनकी कृति तो अनूठी थी ही, इनका व्यक्तित्व भी बहुत प्रभावशाली था। आकृति और प्रकृति दोनों से सम्पन्न। दिव्य गौर वर्ण, हृष्ट–पुष्ट शरीर, लंबा–तगड़ा, ऊँचाई छह फूट से ज्यादा हीं, भव्य और आकर्षक मुखाकृति के साथ–साथ गंभीर आवाज भी। कहते हैं दिनकर एक प्रसिद्ध कवि के साथ–साथ एक अच्छे गायक भी थे। हिन्दी भाषा के ऐसे सुप्रसिद्ध कवि और गद्यकार रामधारी सिंह 'दिनकर' का सम्पूर्ण जीवन ही साहित्य को समर्पित हो गया।

आज जबकि सारा विश्व भूमण्डलीकरण और बाजारवाद की संस्कृति की गिरफ्त में है, हमारा देश भी उससे अछूता नहीं रहा। ऐसी स्थिति में आज दिनकर और उनका सारा साहित्य उतना ही महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है, जितना कि स्वतंत्रता संग्राम और उसके बाद के दिनों में। आज हमारा देश अनेक जटिल समस्याओं से जूझ रहा है, जिसने आतंकवाद, क्षेत्रीयता आदि ज्वलंत समस्या है। इसकी परिणति वैमनस्यता, साम्प्रदायिकता, अशांति आदि है जो किसी भी राष्ट्र के विकास में अवरोध है। कवि दिनकर हिन्दी साहित्य के सर्वाधिक सशक्त एवं समृद्ध सांस्कृतिकम मनोभाव के राष्ट्रकवि हैं। उनका दृष्टिकोण सर्वथा मानवीय स्वतंत्रता एवं तत्कालीन एवं वर्तमान समस्याओं से मुक्ति का पक्षधर रहा है। उनके रचना–कर्म की आस्था और विश्वास का पूरा वातावरण वेद, पुराण, भारतीय इतिहास, मिथक और ऋषि कल्पनाओं की शक्ति से निर्मित है। यह आस्था प्राकृतिक सौन्दर्य एवं मानव जीवन के यथार्थ को नये एवं आधुनिक युगबोध से प्रस्तुत करने में समर्थ है। युद्ध की समस्या, वर्ण–व्यवस्थाजन्य सामाजिक समस्या, मानवीय अभिव्यक्ति एवं स्वातंत्रय की रक्षा की समस्या, क्षेत्रीयता आदि अनेक जटिल समस्याएँ वतमान में मौजूद हैं। वर्तमान परिवेश एवं संदर्भ में इन सभी जटिल समस्याओं के उपयुक्त समाधान ढूँढ़ने का दायित्व रचनाकार का होता है, जिसे राष्ट्रकवि 'दिनकर' ने बखूबी निभाया है।

वे कहीं सत्य और अहिंसा से गाँधीवादी का समर्थन करते हैं तो कहीं सशक्त क्रांति का। कहीं नारी प्रेम की आकांक्षा करते हैं तो कहीं सर्वहारा उदय की। कवि के इन विविध आयामों को राष्ट्रीयता की व्याप्ति में समेटा जा सकता हैं आज देश में 'नारी सशक्तिकरण' और 'महिला–आरक्षण' का विषय प्रासंगिक हो गया है। ऐसे में दिनकर की महान् कृति 'उर्वशी' की चंद पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं–**'एक मूर्ति में सिमट गयी, किस भाँति सिद्धियाँ सारी,/मुझे कब था ज्ञान, कि इतनी सुन्दर होती है नारी,/जन–जन के मन की मधुर वाहि, प्रत्येक छद्म की उजियाली,/'पारी की मैं कल्पना चरम, नर के मन में बसने वाली।'**

निःसंदेह कवि दिनकर नारी की शक्ति एवं सिद्धियों से भली–भाँति परिचित थे। दिनकर का प्रथम काव्य संग्रह 'रेणुका' है जिसमें क्रांति के उद्घोष के साथ हीं दया, माया, ममता और अहिंसा की शीतल छाया की मांग है। 'हुंकार' दिनकर की दूसरी महत्वपूर्ण कृति है जिसे स्वयं कवि ने राष्ट्रीय गीतों का संग्रह कहा है। कवि देश की तत्कालीन राजनीति से उब कर विप्लव के गीत गाता है।

'सामधेनी' में कवि की दृष्टि व्यापक हो गयी है इसमें सन् 1942 से 1946 के मध्य घटी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय घटनाएँ काव्य का वर्ण–विषय हैं। 'कुरूक्षेत्र' और उसके बाद कवि की गंभीरता परिलक्षित होती है। दो–दो विश्वयुद्धों की विकरालता और भावी महायुद्ध की भयावह आशंका से विश्व

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 8, Issue 8 (August 2018)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के बुद्धिजीवी युद्ध और शांति के संबंध में गंभीर विचार करने लगे थे। 'कुरूक्षेत्र' में कवि ने युधिष्ठिर और भीष्म के संवाद के माध्यम से अन्याय के विरुद्ध युद्ध का समर्थन किया है। उनकी मान्यता थी कि न्यायोचित अधिकार मांगने से नहीं मिलता, बल्कि उसे लड़कर लिया जाता है। सहिष्णुता, क्षमा आदि विजेता की शोभा है। हारी हुई जाति के लिये सहिष्णुता अभिशाप है। तभी तो उनकी लेखनी बोल उठती है–**'क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो,/उसको क्या जो दंतहीन, विषहीन, विनीत सरल हो।'**

इसमें दो मत नहीं कि दिनकर ने अन्याय और शोषण के विरुद्ध दलितों और शोषितों को रण के लिए ललकारा है और वर्ग–संघर्ष की आवाज उठाई है, पर शांति की समस्या को कवि ने मर्मस्पर्शी ढंग से व्यक्त किया है। द्रष्टव्य है–**''श्रेय होगा सुष्ठु विकसित मनुज का वह काल,/जब नहीं होगा धरा नर के रूधि से लाल।/श्रेय होगा धर्म का आलोक वह निर्बन्ध।''**

कवि के अनुसार,–''कहते हैं प्रत्येक कवि जीवन भर में एक ही कविता लिखता है, अर्थात् प्रत्येक कवि की सारपी रचनाओं के भीतर कोई एक ही सूत्र व्याप्त रहता है तथा उसकी सभी कविताओं के पीछे एक ही तरह की मनोदशा बराबर उपस्थित रहती है।'' यह बात दिनकर की समस्त रचनाओं में सहज ही देखी जा सकती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भारतवर्ष में पढ़ाई–लिखाई का माध्यम अंग्रेजी थी।

दिनकर के इस उद्घोष से तत्कालीन सत्ता तिलमिला गयी थी लेकिन देशावासियों के मन में राष्ट्रीयता की भावनाएँ उठने लगी थीं।

वर्त्तमान युवा पीढ़ी अपने अंदर आत्मबल एवं विश्वास की कमी के कारण किसी भी कार्य को करने से पहले संशयग्रस्त हो जाते हैं एवं भावी फल के प्रति आश्वस्त नहीं हो पाी। उनके लिए 'दिनकर' की यह ललकार कितना प्रेरक व प्रासंगिक है ? देखें–**''है कौन विघ्न ऐसा जग में टिक सके वीर नर के मग में?/खम ठांक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़,/मानव जब जोर लगता है, पत्थर पानी बन जाता है।''**

दिनकर जी केवल उच्च कोटि के कवि ही नहीं वरन् उच्च कोटि के गद्यकार भी हैं। इनके लगभग पच्चीस गद्य ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। प्रसिद्ध विशद् ग्रंथ 'संस्कृति के चार अध्याय' वर्तमान संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिक हैं। आज देश भिन्न–भिन्न जातियों और धर्मों के प्रपंच से जूझ रहा है, ऐसे में इस ग्रंथ की उपादेयता और प्रासंगिकता बढ़ गई है। उन्होंने इसमें हिन्दू धर्म को अनेक विश्वासों का समुच्चय माना है। वे बौद्ध, जैन आदि धर्मों को हिन्दुत्व का ही एक भिन्न रूप मानते हैं। दिनकर का मानना है कि अहिंसा के बीज वेद में ही विकसित हुए हैं, जिसका प्रचार विशेष रूप से जैन धर्म में हुआ। बौद्ध धर्म के विषय में दिनकर का मत है कि यह हिन्दुत्व से ही प्रकट हुआ। इस्लाम पर भी दिनकर ने अपने इस ग्रंथ में बड़ी गहनता से विचार किया है। वे कहते हैं–''इस्लाम ऐसा धर्म है जिसका विषयसार समाज है अथवा जो व्यक्ति के सभी आचारों का निर्धारण करता है।''[2] इस्लाम और हिन्दुत्व के विवाद के संबंध में दिनकर का मत है कि 'धीरज और शान्ति' से देश का जितना भला होगा उतना आवेश और अशांति से नहीं।''[3] निःसंदेह वर्तमान संदर्भ में दिनकर अधिक प्रासंगिक हो गये है क्योंकि आज हमारा देश इस तरह की समस्याओं से आये दिन रू–ब–रू हो रहा है।

आज की वैज्ञानिक और बाजारू सभ्यता पर दिनकर की मान्यता है कि वर्तमान विश्व की संकट का समाधान बुद्धिवाद नहीं बल्कि धर्म और आध्यात्म है। धर्म हीं सभ्यता का सबसे बड़ा मित्र है। धर्म दया है, धर्म ही विश्व–बंधुत्व है, धर्म ही विश्व शांति है। ये हीं संस्कृति के गुण हैं।[4] कला के मूल्य पर विचार करते हुए दिनकर का मानना है कि आज का कलाकार एक ऐसी निस्संगता के वातावरण में जी रहा है जो कि आधुनिकता के प्रसार के साथ अधिक बढ़ती जा रही है। आधुनिक कलाकार प्रचलित मूल्यों का विरोध तो करता है, परन्तु नये मूल्यों की स्थापना की बात नहीं करता है। रचनाकार के साथ भी यही बात है। वास्तव में आज पूरे देश में यही स्थिति है कि रचनाकार वर्तमान प्रचलित मूल्यों का

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 8, Issue 8 (August 2018)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विरोध तो करता है पर अनमने ढंग से। नई पीढ़ी को कोई स्वस्थ और स्थाई दिशा मिल सके, ऐसा कोई नया मूल्य हमारे सामने प्रस्तुत नहीं करता।

आज क्षेत्रवाद की समस्या भी ज्वलंत है। पाकिस्तान का निर्माण भी इसी की उपज है। इस संदर्भ में दिनकर का मानना है कि इसके लिए हिन्दुत्व और इस्लाम की साहित्यिक प्रेरणा ने जमीन तैयार की। आजादी की लड़ाई के समय जो सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुआ उसमें हिन्दुओं का रूझान 'वेद, पुराणों' की ओर हुआ जबकि मुसलमानों का 'कुरान' की ओर। इकबाल, मौलाना हाली आदि कवियों ने अपनी रचनाओं में इस्लमा की दुर्दशा का बखान कर विश्व के सभी मुसलमानों को एक होने की प्रेरणा दी। भारत से अलग पाकिस्तान की मांग भी इसी की प्रेरणा थी।

वर्तमान गलित राजनीति के कारण देश में व्याप्त भ्रष्टाचार और ईर्ष्या के दौर में कवि दिनकर कितने प्रासंगिक हैं, इसका अंदाजा 'रेती के फूल' से लगाया जा सकता है। ''ईर्ष्या से जला भुना आदमी जहर की चलती फिरती गठरी के समान है जो हर जगह वायु को दूषित करती फिरती है। ''एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य तक जाने की जितनी भी पगडंडियाँ हैं उनमें बुद्धि की पगडंडी सबसे कठिन है और हृदय का रास्ता सबसे आसान है।''[5]

वर्तमान संदर्भ में 'विजय के आँसू' में उनका यह कथन कितना प्रासंगिक है–''केवल भीष्म ही नहीं, मुझे लगता है, भारत की विशाल संस्कृति ही आज शर–शैया पर सोई हुई है।''[6]

आधुनिकता को दिनकर समय सापेक्ष धर्म मानते हैं। 'राष्ट्रीय एकता' निबंध में दिनकर ने देश की धार्मिक, साम्प्रदायिक व भौगोलिक एकता की समस्या पर गंभीरता से विचार करते हुए लिखा है–''हम स्वतंत्रत तभी तक रहते हैं जब तक हम एक रहते हैं। जब भी एकता खिड़की से होकर निकल भागती है, हमारी स्वतंत्रता सदर दरवाजा खोलकर चल देती है।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि दिनकर की काव्य यात्रा 'रेणुका' (1935) से प्रारंभ होकर 'हारे को हरिनाम' (1970) तक से गुजरती हुई गद्य की दुनियाँ में 'मिट्टी की ओर' (1946) से (प्रारम्भ होकर) 'विवाह की मुसीबतें' (1974) तक पूरी होती है और 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' उनके साहित्य का शाश्वत मूल्य बन जाता है।

प्राणी मात्र के हित के प्रति इतने सचेत थे कवि दिनकर कि कहा जाता है कि चीनी आक्रमण के समय 'परशुराम की प्रतीक्षा' कविता का पाठ करते–करते वो रो पड़े थे और बीच में ही काव्य पाठ रोक कर मंच पर बैठ गये, और उनकी आँखों से आँसुओं के मोती बरसने लगे थे। आज जबकि पूरा विश्व बारूद के ढेर पर खड़ा है दिनकर और भी प्रासंगिक हो गये हैं। ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी राष्ट्रकवि दिनकर को शत्–शत् नमन।

संदर्भ सूची :

1. निबंध, हिन्दी कविता और छंद, दिनकर।
2. 'संस्कृति के चार अध्याय', दिनकर।
3. वही।
4. गद्यकार दिनकर, डॉ. पुष्पारानी गर्ग, 'हिन्दी अनुशीलन' (दिसम्बर–मार्च, 2005)।
5. 'रेती के फूल', दिनकर, उदयाचल प्रकाशन, 1972.
6. वही।